IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य विद्यार्थियों एवं दिव्यांग(विशिष्ट) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

सुमिता कपूर
शोधार्थी कोटा विश्वविद्यालय,कोटा (राजस्थान)
एवं सहायक आचार्य (शिक्षा)
अकलंक कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कोटा

डॉ देवेन्द्र कुमार अग्रवाल
प्राचार्य
सौरभ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, करौली

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का अध्ययन किया गया है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का अनुप्रयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में हाडौती क्षेत्र के कोटा संभाग के(कोटा, बांरा, बूंदी, झालावाड (राजस्थान) के माध्यमिक स्तर के 100 विद्याथियों का चयन यादृच्छिक प्रविधि द्वारा किया गया तथा स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण एवं ऐ. के.पी. सिंहा और आर.पी. सिंह की समायोजन सूची का प्रयोग करके परिणामों से यह निष्कर्ष निकला कि सामान्य तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में अन्तर होता है।

मुख्य शब्द :

- समावेशी शिक्षा
- सामान्य विद्यार्थी
- दिव्यांग विद्यार्थी
- समायोजन
- शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा मनुष्य की शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य को सभ्य, सुंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा प्राप्त मनुष्य समाज के साथ समायोजन कर अनुशासन के साथ जीवन यापन करता है। शिक्षा का अर्थ है सीखना और सिखाना। प्रत्येक राष्ट्र व समाज का भौतिक व आध्यात्मिक विकास शिक्षा पर निर्भर करता है।

आधुनिक शिक्षा को समावेशी शिक्षा के साथ जोड़ा गया है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विकलांग अधिनियम 1995 के अनुच्छेद 26 में दिव्यांग बच्चों को 6-18 वर्ष तक निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रावधान है। नई शिक्षा नीति-2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के तहत रखा गया है। इसका भी उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली एक समान एवं समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराना है।

समावेशी शिक्षा की अवधारणा का श्रेय सेम्युअल ग्रिडले होवे एक अमेरिकी विद्वान को जाता है। उन्होंने अन्धे बालकों की शिक्षा को सामान्य बालकों के साथ देने पर बल दिया। समावेशी शिक्षा से तात्पर्य दिव्यांग बालकों की शिक्षा सामान्य विद्यालयों में, सामान्य बालको के साथ कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की ओर इंगित करती है। यह शारीरिक तथा मानसिक रूप से बाधित बालकों को सामान्य बालको के साथ शिक्षा देने का समर्थन करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत देश की जनसंख्या121 करोड़ का 2.68 करोड़ दिव्यांग है। जो कि कुल जनसंख्या का 2.21 % है।

समावेशी शिक्षा को विकसित करने का श्रेय सलामांका कथन 1994 (स्पेन) को जाता है। जो कि इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय दस्तावेज के रूप में आया है । शिक्षा का समावेशीकरण यह बताता है कि विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए प्रत्येक बच्चे की चरित्रगत विशेषताएं रूचियां, योग्यताएं एवं सीखने की आवश्यकताएं अनोखी होती है। अत: शिक्षा प्रणाली में इन विशेषताओं व आवश्यकता की व्यापक विविधता का ध्यान रखना चाहिए।

सलामांका कथन कहता है कि प्रत्येक बच्चे के पास शिक्षा का अधिकार है। प्रत्येक बच्चे में अद्वितीय विशेषतायें, रुचियां, क्षमतायें होती है। अत: इनकी विशेषताओं को ध्यान रखते हुए विद्यालयों में शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालयों को स्वीकार नहीं करती। दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग करना अब मान्य नहीं है। दिव्यांग बच्चों को भी सामान्य बच्चो की तरह शैक्षिक गतिविधियाँ में भाग लेने का अधिकार है।

समावेशी शिक्षा में बच्चो को उनकी शारीरिक, बुद्धिमता, सामाजिकता, भावनात्मकता तथा भाषायी विभिन्नना पर ध्यान दिये बिना विद्यालयों को सभी बच्चों को दाखिला देना चाहिए। दिव्यांग व प्रतिभावन बच्चे, गली के और कार्य करने वाले बच्चे, गांव या बंजारे के बच्चे तथा भाषायी प्रजातीय या सांस्कृतिक अल्पसंख्यक के बच्चे तथा दूसरे अलाभान्वित या अधिकार हीन क्षेत्र समूह के बच्चो में कोई भेदभाव नहीं है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 के अन्तर्गत 21 प्रकार की विकलांगता को शामिल किया गया है।

समस्या का औचित्य

किसी भी राष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने हेतू सभी प्रकार के विद्यार्थियों को श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। समावेशी शिक्षा में जब दिव्यांग विद्यार्थियों को सामान्य बालकों के साथ उचित प्रकार से शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होने के साथ - साथ समायोजन में भी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस समस्या को सामयिकी अध्ययन एवं इसके निराकरण हेतू सृजनात्मक विचारों का क्रियान्वयन राष्ट्र निर्माण हेतू अति आवश्यक है।

समावेशी शिक्षा से विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच, अनुकरणीय व्यवहार, स्वीकृति, धैर्य, सहनशीलता, मित्रता आदि कौशलों का विकास होता है। यदि समावेशी शिक्षा में सामान्य बच्चों के साथ-साथ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा देनी है तो शोध के माध्यम से समस्याओं एवं उनके समाधान खोजने की अत्यन्त आवश्यकता है।

शोध समस्या

समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग (विशिष्ट) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

उद्देश्य

समावेशी शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियाँ की शैक्षिक उपलब्धि का निम्न संदर्भ में अध्ययन करना।

1- समावेशी शिक्षा के अंतर्गत माध्यमिक स्तर के विद्याथियों का समायोजन का अध्ययन करना।

2- समावेशी शिक्षा में माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

3- समावेशी शिक्षा में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन को बढ़ाने हेतू सुझाव प्रेषित करना।

परिकल्पना

शोध में शून्य परिकल्पनाओं का प्रयोग किया है।

1- समावेशी शिक्षा में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 - समावेशी शिक्षा में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

शोध परिसीमन

हाडौती क्षेत्र कोटा संभाग के (कोटा, बारां, बूंदी व झालावाड) जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

शोध प्रविधि - विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण-

1 - स्वयं निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

2 - ऐ. के.पी. सिंहा एवं आर.पी. सिंह की समायोजन सूची

जनसंख्या पर न्यादर्श

माध्यमिक स्तर के सामान्य तथा दिव्यांग 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधि-

1 मध्यमान

2. प्रमाणित विचलन

3. t परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सामान्य तथा दिव्यांग विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि के क्रांतिक अनुपात को दर्शाने वाली तालिका

क्रम संख्या	न्यादर्श का प्रकार	Mean	Standard Deviation	Variance	Calculated t value
1	सामान्य विद्यार्थी	6.52	1.74	3.03	3.18
2	दिव्यांग विद्यार्थी	4.76	1.57	2.47	

व्याख्या

उपरोक्त सारणी को देखने से यह ज्ञात होता है कि सामान्य विद्याथियों व दिव्यांग विद्याथियों के शैक्षणिक स्तर के मापन के मध्यमान क्रमश: 6.52 तथा 4.76 है। तथा प्रमाणिक विचलन 1. 74 व 1.57 है। सख्यिकी गणना से प्राप्त t मान 3.18 है। जो कि 0.01 विश्वसनीयता स्तर पर उपलब्ध सूची के t मान 2.365 से काफी अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। अत: यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य तथा दिव्यांग विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर होता है।

सामान्य तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन के क्रांतिक अनुपात को दर्शाने वाली तालिका

क्रम संख्या	न्यायदर्श का प्रकार	Mean	Standard Deviation	Variance	Calculated t value
1	सामान्य विद्यार्थी	7.0	2.29	5.14	3.10
2	दिव्यांग विद्यार्थी	4.24	1.92	3.61	

व्याख्या

उपरोक्त सारणी को देखने से यह ज्ञात होता है कि सामान्य विद्यार्थियों व दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर के मापन के मध्यमान क्रमश: 7.0 तथा 4.24 है। तथा प्रमाणिक विचलन 2.29 व 1.92 है। सख्यिकी गणना से प्राप्त t मान 3.10 है। जो कि 0.01 विश्वसनीयता स्तर पर उपलब्ध सूची के t मान 2.365 से काफी अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। अत: यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर सामान्य तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष - उपरोक्त शोध अध्ययन से स्पष्ट है कि समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर पर सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों को साथ-साथ शिक्षा प्रदान करने से सभी विद्यार्थियों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध होते है। तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में वृद्धि होती है। किन्तु सामान्य तथा दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में सार्थक अन्तर होता है।

प्रस्तावित शोध से अपेक्षित योगदान

1- प्रस्तुत शोध के माध्यम से सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्य समायोजन के स्तर का मापन किया जा सकेगा। तथा अपेक्षित समायोजन स्तर प्राप्त करने में आ रही बाधाओ को पहचानकर निराकरण किया जा सकेगा।
2- प्रस्तुत शोध के माध्यम से सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के मध्य शैक्षिक स्तर का मापन किया जा सकेगा। तथा अपेक्षित शैक्षिक स्तर प्राप्त करने में आ रही बाधाओ को पहचानकर निराकरण किया जा सकेगा।
3- प्रस्तुत शोध कार्य समावेशी शिक्षा को लेकर सकरात्मक मानसिकता के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।
4- प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा माध्यमिक स्तर के साथ -साथ प्राथमिक तथा उच्च माध्यमिक तथा उच्चस्तरीय शिक्षा पर भी समावेशी शिक्षा का विकास किया जा सकेगा।

संदर्भग्रंथ सूची

. ठाकुर यतीन्द्र (21-2020) समावेशी शिक्षा, आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन
- सिंह अरुण कुमार (2015) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां
- राय पारसनाथ, राय सी.पी 2020 अनुसंधान परिचय
- यादव अखिलेश (2019) समावेशी शिक्षा का विकास
- सिंह मदान (2019) समावेशी शिक्षा
- प्रो. शर्मा बैजनाथ, डॉ श्री माली राजेन्द, श्री मति तिवारी अंजना, डॉ शर्मा रजनीश (2016) समावेशी विद्यालय का निर्माण

जर्नल्स

1 - रिसर्च रिव्यू जर्नल्स वाल्यूम -2, ईशु- 06, जर्नल्स आफ मल्टी डीसीप्लीनेरी 2017 जून मुंबई में निजी समावेशी विद्यालय में विकलांग बच्चे विशेषज्ञ एवं चुनौतियां
2 - इंक्लूसिव एजुकेशन एण्ड इफेक्टिव क्लासरूम प्रैक्टिस यूरोपियन मैली फॉर डेवलपमेंट इन स्पेशल नीटस एजूकेशन
3 - बिहार में वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा दशा एवं दिशा पीयर रिव्यूड 00 रिपोर्ट जर्नल्स जनवरी 2001
4 - प्रेरणा के स्रोत— नई शिक्षा नीति2020 जुलाई
5 - शैक्षणिक अनुसंधान में नये दृष्टिकोण 4 (2) जुलाई 2015 vol2- ग्रामीण क्षेत्र में समावेशी शिक्षा
6 - इंटरनेट- शोधगंगा, शोधगंगोत्री, शोधसन्धु